कुरुम्बा भाषा: जो बोली जनगणना की किताब में नहीं मिलती

प्रकाशित: 13 नवंबर 2026 · pcsmantra.com



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

खबरों में क्यों

13 नवंबर 2026: देश में जनगणना की प्रक्रिया चल रही है और इसी बीच केरल की एक छोटी आदिवासी जनजाति - कुरुम्बा - और उसकी भाषा का भविष्य चर्चा में आया है। वर्ष 2024 तक इस समुदाय की जनसंख्या मात्र 2,719 है। कुरुम्बा भाषा का अपना कोई लिपि (लेखन-पद्धति) नहीं है - यह पूरी तरह मौखिक भाषा है। चूँकि जनगणना में 10,000 से कम बोलने वालों वाली भाषाओं को अलग से दर्ज नहीं किया जाता, कुरुम्बा भाषा सांख्यिकीय रूप से 'अन्य' श्रेणी में समा जाती है, जिससे इसके अस्तित्व पर सवाल खड़े होते हैं।

कुरुम्बा समुदाय: एक परिचय

निवास: कुरुम्बा समुदाय केरल के पालक्कड़ जिले के अट्टापाडी क्षेत्र के पहाड़ी-वनांचलों में रहता है।

दर्जा: भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय ने इसे विशेष रूप से सुपीछड़ी जनजातीय समूह - Particularly Vulnerable Tribal Group (PVTG) - घोषित किया है। यह वह श्रेणी है जिसमें देश की सबसे कमजोर आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक स्थिति वाली जनजातियाँ रखी जाती हैं। केरल में कुल पाँच PVTG हैं, जिनमें कुरुम्बा एक है।

जीवन-यापन: समुदाय वन-संसाधनों, सामूहिक परंपराओं और मौखिक ज्ञान-परंपरा से जुड़ा है; कुरुम्बा भाषा इसकी सांस्कृतिक पहचान और अनुष्ठानों का केंद्र है।

कुरुम्बा भाषा की विशेषताएँ

- **मौखिक परंपरा:** भाषा की कोई लिपि नहीं है; ज्ञान, गीत, कथाएँ और औषधीय समझ पीढ़ी दर पीढ़ी मुँहज़बानी चलती है।
- **दैनिक उपयोग:** आज भी समुदाय के भीतर संवाद की प्राथमिक भाषा कुरुम्बा ही है।